Appendix-2

# परिशिष्ट - २

## भगवंतराय के प्रति की गई मंडल के कवियों की प्रकीर्ण रचनायें

(पृष्ठ ३१७ - ३१६)

## इंद्र कवि

चढ़ि वाजि जही भगवन्त बली रन हेतु कराल कृपान कढ़ा
उत तै करि रैलै महा वलसी मन कोपि सहादत खान बढ़ा
कर खा रव मरहि और दोऊ कवि 'इन्द्र' सु बंदिन वृंद पढ़ा
परिबाग उछालि दियो तबही निज पाय तुरंग मतंग चढ़ा (१)

आतुर चढ़त भये ऊपर गिरी न 'इन्द्र'
श्रृंग दौरि कै दरीन कुंज पेलिगो
ग्राम पुर छांह छांह सहर मभाइ सब
नदी नद तीरि कै नदीस पार हेलिगो
ठेलि गो पताल अरु रेलिगो अकास बहु

दान औ कृपान जस भूप भगवंत कर
आस दस भांति यहि आंसु महि फैलिगो (२)
(असोथर में प्राप्त)

## कंठ कवि

वाको ज्यो प्रदच्छिन दो, कटक सजाय याको
काट काट्यो फलक में, फतै वर हद की
वासे कर जोर यासों करन दो जोर
खीची करन सों बढ़ी रजपूती हद मद की
महाबली भगवंत 'कंठ' कवि कुह याते
तोही पै रही है आज लाज हिंदु पद की
दिल सों भगत रामचन्द्र की करत
अरु तेग सों भगति करी राव रामचंद्र की (३)
(असोथर)

## उदयनाथ ` कवीन्द्र `

झुक्कत अचल अरि लुक्कत उलूकन लौं
मुक्कत किलैन के हुकार नद वैस के
भनत ` कवीन्द्र ` तहां कै सकै मवासे कौन
कंपत अवासे अलिकैस के लकैस के
जीति कै जरूर साजे फौजन के अग्रवाजे
भारे भगवंत के सवारे वल वैस के
दरपे दिली के उमरावन के उर पारे
गरजे नगारे गाजीपुर के नरेस के (४)
(श्रृंगार संग्रह)

## चतुरेश

आठ कोस असनी भिटौरा है नवें कोस
पांच कोस किसनपुर एक उला के पास है
तीस कोस कानपुर फतूहाबाद वारा कोस
वीस कोस चित्रकूट जहां राम दास है
तीस कोस प्रागराज काशी है साठ कोस
डेढ़ कोस सूर्य सुता करत पाप नास है
खीची भगवंत भूप मैरो चतुरेश नाम
गाजीपुर परगना असोथर में बास है। (५)

जहां छूटत जमुरके जात कूर जन मुर कै
मारे घूम धुंवा धुरके लागे तरनि छिपान
जहां लै लै करवालैं एक एकन पै घालैं
चलै वरछी सांग माले युद्ध भयो वे प्रमान
जहां लागे गिरै मुंड अति रुण्डन पै रुण्ड
चतुरेश जी वितुंड विना शुंड वितरान

जहां तेज के निधान भिरे भीम के समान
खैंचि म्यान ते कृपान पिले गाजी पुरी ज्वान (६)

जहां कायर भगाने उद्भट लपूटाने
धीर वीर सरसाने लाज राखी हिन्दुआन
जहां पसरे मरद्द पिले सन्मुख छिरद्द
मूंदे तरनि गरद्द लागे धौंसा घहरान
जहां तरि गोली वरसत देखि हर हरसत
परे फर फरकत मुगल पठान
तहां खीची कुलचन्द हरिकेश फरचन्द
जोर भूप भगवन्त वीर वाहि किरवान (७)

जहां जोगिनी समूह गान करत अमूह
जुरे वीरन के जूह जेहि समर डेरान
जहां मारे वरछानन के गोली तीर बानन के
और फरसानन के भयो घमसान
जहां राजत छिरद्द मद झरत विहद्द
चतुरेश जू गरद्द उड़ि लागी आसमान
तहां तेज के निधान भिरे भीम के समान
खैंचि म्यान ते कृपान पिले गाजीपुरी ज्वान (८)

जहां तेजि के कपट जब चलत झपट्ट
देत दुवन दवद्द भयो धुवां ह्वसान
जहां फूटन भुशुंडी आय नाचे पंच मुंडी
अरि भागत वितुण्डी मारु माची वुगदान
जहां तेग की चमक्क वह्निन की धमक्क
चतुरेश जू गमक ढाढ़ी गावे कर —— खान
तहां तेज के निधान भिरे भीम के समान
खैंचि म्यान तैं कृपान पिले गाजीपुरी ज्वान। (६)

जहां आए दल वकूल विहूल मुगलके
सुजुरिगै दुरके दुहूं दलनि अमान
जहां वौलत विरके वीर रंग मैं मरके
उठी भूमि तै गरक फैलि रही आसमान
जहां फहरै निसान चमू छाई बरछान
महा मैघ से मतंग मैघ लागै वरषान
तहां तेज के निधान हनुमान के समान
खैंचिम्यान तै कृपान पिलै गाजीपुरी ज्वान ।(१०)

जहां तैज की चमक वरछीन की झपक
तौप तुपक धमक चलैं तीखे तीरवान
परी लुत्थन पै लुत्थ जहां सूरन के जुत्थ
रहे गुत्थ मुख मारू मारू करै गान
गिरै गिरि से वितुंड फरकत सुंड दंड
भूमि छाई रुंड मुंड करै कौतुक मसान
तहां तैज के निधान हनुमान के समान
खैंचि म्यान तै कृपान पिलै गाजीपुरी ज्वान।(११)
(असोथर में शिवनारायण सिंह के संग्रह से)

नैवाज

जाके तेज झार से पतंग से अमीर होत
लौहै की लपट तोहिं लागत सुधासी है
ज्वन दयंतन के जोम को मिलाइवे को
तिरछी `निवाज` तोमे कौर्य की कला सी है
भटन के मुकुत की भूप भगवंत तेही
तरिथ सौ गंगा यमुना को बीच वासी है
तैरौ तीर मानो मथुरा को यमुना को तीर
मारिवे को बैरिन कृपाणी मानो कासी है (।८४। (१२)
(श्रृंगार संग्रह)

(शिवसिंह सरोज में नेवाज का निम्न कवित्त दिया गया है जो श्रृंगार संग्रह में हेम कवि के नाम से है )

पारथ समान कीन्हो भारत में आनिवान सिरवाना वान्ध्यो है समर सपूती को
कोरि कोरि कूट गयो हटि के न पग पाछे ख्यो लीन्ह्यो रणजीति के कि खान करतूतीको
भनत नेवाज दिल्ली पति सों सहादत खां करत बखान एतो मान मजबूती को
कतल मरद्द नद्द शोणित सों भर गयो करि गयो हद्द भगवन्त रजपूती को

पाठान्तर की दृष्टि से श्रृंगार संग्रह का कवित्त इस प्रकार है :

पारथ समान कीनो भारत मही में आनि
बांधि सिर वाना ठान्यो समर सपूती को
कोरि कोरि कटि गयो हटि के न पगु दीनो
लीनो रण जीति किरपान करतूती को
' हेम ' कवि कहें दिल्ली पति सों सहादत खां
करत वखान एतो मान मजबूती को
कतरि मरद्दि करि नद्द भरि शोणित सों
हद्द करि गयो भगवंत मजबूती को । (१३)

असोथर के शिवनारायण सिंह के संग्रह में यही कवित्त 'दोय' नाम के कवि का लिखा है । हो सकता है हेम को लिपिक ने दोम लिख डाला हो ।

पारथ समान कीन्हो भारत मही में आनि
वांधि सुरवाना ठान्यो समर सपूती को
कोरि कोरि कटि गयो हटि के न पाव दीनो
कीन्हो सफो जंग किरवान कर तूती को
कहै दोय कवि दिल्ली पति सों सहादति खां
करत वखान ऐसे मान मजबूती को
कतरि मरद्द कटि नद्द भरि श्रोणित सो
हद्द करि दियो भगवंत रजपूती को ।(१४)

असोथर में नेवाज कवि के नाम से लोग इस छंद को याद किया करते हैं :

दिल्ली दरबार सौं भाखै नेवाज अनाहक कीन्हों जंजाल जिया को
नाहर सौं गरजे रन में लखि वाको बुन्देल बड़ी पतिया को
मारि वरच्छन पंचम को छलनी भगवंत कियो छतिया को
मारो कुमार दलपत राय को दीन्हों बुताय दिया दतिया को

## भूधर

उठि गयो आलमसों रुजुक सिपाहिन को
उठि गए बंधैया सबै वीरता के बाने को
भूधर भनत उठि गयो है धरासों धर्म
उठिगो सिंगार सबै राजा राव रानेको
उठिगो सुकवि शील उठिगो सजीलो डील
फैल्यो मध्यदेश में समूह तुरकाने को
फूटे भाल भिक्षुक के जूझे भगवन्तराय
अरराय टूट्यो कुल खंभ हिन्दुआने को (१६)
(भूषण-विश्वनाथ प्रसाद मिश्र द्वारा सम्पादित)

म्यानहि कढ़त भूत अफरे अहार पाय हार पाय हरषि महेश आय नचिगे
गाइ गाइ वरन वराङ्गना वरन लागीं, चहलैं सकल श्वान चरवी के मचिगे
भूधर भनत मारे मुगल पठान शेख, सैय्यद अमीर भूप धीरि केते पचिगे
राय भगवन्त जू के खग्ग मुख खेत आयि, खपेते सहादत ते खेस ओट वचिगे। (१७)

दान गयो दुनी से गुमान पुर वासिन को
गुनिन के गांठिन सों मानिक छूटिगो
जूझे भगवंत जूके, धरम धरासों गयो
सूर्य के सिंगारन से सेत ऐसो फूटिगो

भूधर भनत याही हूक होत हिए माहिं
कवि कविताई करिवे से मन छूठिगो
जाचक की मंशा को पूर अब कौन करै
जो तौ हतौ भू मैं कल्पद्रुम सो टूटिगो । (१८)
(असोथर)

मल्ल

नागर पराने सुनि सुमुद सुखाने
रण गज्जर डराने दिल जोर छोरि वाने के
दुपदि संकाने देखि दल के पयाने, अरि
भभरि भुलाने नर कोय हरषाने के
मल्ल कवि हम जानै, वरि रस सरसानै
खीची कुल भानु कोटि हिम्मत वखाने के
कंतन पुकारे सुकुमारी सुन सोर जब
दुंदुभी धुकारे भगवंत मरदाने के। (१६)

आजु महादानिनको सूखि गोदया को सिन्धु
आजु ही [illegible] गरीबन को सब पथ लुटिगो
आजु द्विजराजन को सकल अकाज भयो
आजु महाराजन को धीरज हू छूटि गो
' मल्ल ' कहैं आजु सब मंगन अनाथ भये
आज ही अनाथन को करम सब फूटिगो
भूप भगवन्त सुरलोक को पयान कियो
आज कवि गनन को कल्पतरु टूटिगो । (२०)

शंभुनाथ

आजु चतुरंग महाराज सैन साजत ही
धौसा की धुकार धूरि परी मुंह माही के

भय के अजरिन ते जरिन उजरि भये
सूल उठी उर में अमीर जाही ताही के
वीर खेत वीच वरछी लै विरुझानो है
धीरज न रह्यो शंभु कौन हू सिपाही के
भूप भगवंत वीर ग्वाही कै खलक सब,
स्याही लाई वदन तमाम पातसाही के (२१)
(मिश्रबंधु विनोद)

श्रृंगार संग्रह में इस कवित्त का इस प्रकार पाठान्तर है :

बावन हजारी ते अजारी से महमि गिरयो
धौंसा की धमक धूर परी मुह माही के
भय के अजरिन ते जरिन उजरि भये
पीरि उठी उर में अमरि जाही ताही के
वीर खेत वीच विरुझानो वरछी लै वीर
धरिज न रह्यो शंभु कौन हू सिपाही के
भूप भगवंतराय ग्वाही कै खलक सब
स्याही लाई वदन तमाम बादशाही के (२२)

सुनि गल वल मुगलन के दलन कौ,
हर्षि उठि दौर्यो वीर हरि केस नंद है
माते माते हाथिन के हौदा खंड खंड कीन्हे
मारे वरछिनि सौं विदारे वैरी वृन्द है।
भगवंत नाहर के पंजा से निकसि ' शंभु '
सहमें सहादत चले न छल छंद है
बोलत न डोलत न खोलत पलक जैसे,
सिंह के सपेटे दबि रहत गयंद है। (२३)

सोहति है सुर की सरिता उत काटिवे को अघ-पुंज निपैनी
राजति है रुचि सौं अति ही जमुना इत सूरज लोक निसैनी
लै कवि राजन की मति शंभु सरस्वती फैलि रही सुख देनी
श्री भगवंत लहै तेहि कंत महँ सव अन्तरवेद त्रिवेनी । (२४)

मुगल पठानन चन्देलन बुन्देलन को
फैल्यो दल मानो प्रलै को वारा पाक है
कीवे को दवाऊ हूलि आयो दतिया को राउ
साहन की सरम को जाके सिर मारु है
भूप हरिकेश के कुमार के मुकाविले मैं
जूझयो रामचन्द्र दलपति को कुमार है
राउ के डोलाए ते न डोल्यो भगवन्त जैसे
वायु के डोलाए ते न डोलत पहार है (२५)

कैयक हजार असवार दावादार गिरे
मार वै सुमार सेस नागऊ दवाइगो
गोलन की घड़ा घड़ी तेगन की तड़ा तड़ी,
भालन की भड़ा भड़ी सवद सुहाइगो
तेग को चढ़ाय रन-वीर भगवन्तराय
मारे उमराव सब लोह से अघाइगो
दतिया को राऊ रामचन्द्र जब खेत आयो
दिल्ली वाले दलनि को दिया सो बुझाइगो (२६)

(असोथर)

मतिराम या नाथ ?

दिल्ली के अमीर दिल्ली पति सों कहत वीर
दच्छिण की फौज लैके सिंहल दवाय हों
जडाती जमेसन की जेर कै सुमेर हू लौं
संपति कुवेर के खजाने ते कढ़ाइ हौं

कहै मतिराम लंका पति हू के धाम
जार, जंग जुरे यम हू को लोह सोवनाय हौं
आगि मैं जरैगें कूदि कूप मैं परैगे
एक, भूप भगवंत की महीम पैत जाय हौं (२७)

शृंगार संग्रह में मतिराम के नाम से उद्धृत यह कवित्त असोथर में `नाथ` नाम के कवि का बताया जाता है। असोथर में इसका पाठ शुद्ध है, जिसमें तीसरी पंक्ति इस प्रकार है :

`कहै कवि नाथ लंका पति हूके धाम जाइ
जंग जुरे यम हू को लाह सौं मनाई हौं

एक दूसरे स्थान पर यही कवित्त `दोम` नाम के कवि की छाप से लिखा है

दिल्ली को वजीर दिल्ली पति सो कहत धरि
दक्षिण को जाइ कहूं सिंहल दवाइ हौं
जालती जलेसर सो जोर के सुमेर हू ते
सम्पति कुवेर के खजाने ते कढ़ाइ हौं
कहै दोम कवि लंका पति हू के धाम जाय
जंग जुरि जमहू सो लोह को चवाइ हौं
'आगि मैं गिरैंगे कूदि कूप मैं परैगे एक
भूप भगवंत के मुहिम पै न जाइ हौं। (२८)

## सारंग

शुण्डन समेत काटि विहत मतंगन को
रुधिर सौं रंग रण मंडल मैं भरिगो
भूधर भनत तहां भूप भगवंतराय
पारथ समान महाभारत सो करिगो
मारे देखि मुगल तुरावखान ताही समै
काहू क्स न जानी मानी नट सौं उचरिगो
वाजीगर कैसी दगावाजी करि बाजी चढ़ि
हाथी हाथा हाथी ते सहादत उतरिगो (२९)

अज्ञात

(शृंगार संग्रह में कुछ अज्ञात कवियों के छंद भगवंतराय के लिए लिखे मिलते हैं)

तो पै लागे तर पै धमाके धमकन लागे
धूम धार धुंधरिते यमुना किनारे मैं
मारे वरछीन के विदारे श्म शेरन के
डूबि गयो रेत लोहू बहत पनारे मैं
कूटि डारे कटक जवन की न जात बोची
रोवति वजीर की जमाति यमद्वारे मैं
खोजा की न खोज पाई पीरि की न कला पाई
खीची भगवंतराय खेल तनवारे मैं (३०)

बेगम बिहाल भई जानि सारखां नवाव जू की
सोई हाल कीनो रामचन्द्र की बुंदेली को
मारि मुगलन को मिटायो मद गंध फैल्यो
चहुंधा सुगंध जाकी जीति की चमेली को
है गयो फकीर कमरुद्दी खान सो उजीर
गरे डारि डारा अपकीरति की सैली को
थाह लै लै थकि गो मलाह्लों दिल्ली को कंत
पावत न अंत भगवंत की दलेली को । (३१)

सैना सोर सुनै अनखान्यो खीची सरदार
दौरि अलगार उठि वारन कछू लई
सुनत नगारे हांक दीनी तुरकन, धाव
देवे को नृपति तवै गैल उत की लई
सिंह लौं झपटि नर सिंह भगवंत राय
ऐस ही सहादत पै पौंच्यो जाय यै वई
दृगति ते पग आगे पगनि ते मन आगे,
मन, दृग पगनि में होड़ सी है है गई (३२)

पावसैर लौहे मैं ह्लाई सारी बादशाही
कठिन करारी काहू आके कारीगर की
उचकि उचकि वाकें दई वाके दई
कड़कि कड़कि कड़ी तोड़ी वखतर की
कितने सिपाहियों के घाव वोले भक भक
कितने सिपाहियों ने रह लई घर की
राजन के राजा महाराज भगवंतसिंह
हाथ की सफाई या सफाई जमघर की (३३)

अज्ञात

राउ बुंदेल हरौल दिल्ली को चढ़्यौ है कहा यों मदमतिया के
सामुहें हांक दियौ हथिया करि साहसु वीर बड़ी छतिया कौ
लै वरछी भगवंत नरेश पिल्यौ अभिलाष फतूह थिया के
खेत तज्यौ न अचेत भयौ लगि दातन भूमि गही दतिया के (३४)

जाको देश देशनि संदेसनि चलत जु सदेश हू
विदेश जाके भिक्षुक नरेश से
राख्यौ नहिं लेश अरि कुल को कलेस दै दै
घरे नख केष बर वैश दर वैश से
खीची संमरेश महाराज हरिकेश जू के
चाकर दिनेश से सुसाहव हैं सेस से
साधक धनेश से समागुरु गणेश से
सपूत हैं महेश से सुनाती अमरेश से। (३५)
(यह 'देव' का लिखा हुआ है जो 'जयसिंह विनोद' में
भी है।

समुद सुखान्यौ आज सन्त जन मानिन के दीनन कौ दैव दरखत उखरि गौ
पुन्य प्रताप कौ प्रकाश शशि छनि भयौ तुरनीतम वैरिन सों भरि गौ

कीन्हो विश्वनाथ विराम धाम आज कीरत को भाडो भूरि भूतल से टरि गो
हरि गो गुनिन के गुनन को गुमान हाय, गुनिन को गाहक जहान से उचरि गो (३६)

सिंह के सरिस सभासिंह के भवानी सिंह
सागलें सन्मुख नबावके सिधारो है
कूटी तेग तोपें घमाके वरि वच्चों के
साँचे राचे न हिला हजारों हनि डारे हैं
काहू साहू हाडा नाहीं ऐसी शक्ति कछवाहे मैं
ऊधी सवाई कौन घौसल चिकारो हैं
मारो है शहादत खां जानि के तुराव खाँ को
कुंवर भवानी सिंह आज लौं न हारो है (३७)

गीधन के घर मंगलचार श्रोनित खाय के जोगिन नाची
भूप नवाब को लेत दुबाय और गरीवन कोऊ बाँची
भागिबे होय तो भागि वचै नहिं भोर होत महाभारत माची
वैगम कहैं चलि भागि नवाब नहिं भूप भगवंत से कोऊन बाची (३८)